मन्वन्तर निर्धारण :

डॉ. अरविन्द कुमार
व्याख्याता, श्रीरामजीलाल स्मृति शिक्षा महाविद्यालय
जयपुर

सूतजी बोले- प्रथम 'स्वायम्भुव' मन्वन्तर है, उसका स्वरूप पहले बतलाया जा चुका है। सृष्टि के आदिकाल में 'स्वारोचिष्' नामक द्वितीय मनु हुए थे। उस स्वारोचिष् मन्वन्तर में 'विपश्चित्' नामक देवराज इन्द्र थे। उस समय के देवता 'पारावत' और 'तुषित' नामसे प्रसिद्ध थे। ऊर्जस्तम्ब, सुप्राण, दन्त, निर्ऋषभ, वरीयान्, ईश्वर और सोम- ये उस मन्वन्तरमें सप्तर्षि थे। इसी प्रकार 'स्वारोचिष' मनु के किम्पुरुष आदि पुत्र उन दिनों भूमण्डल के राजा थे। तृतीय मनु 'उत्तम' नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके समय में सुधामा, सत्य, शिव प्रतर्दन और वंशवर्ती (अथवा वंशवर्ती)-ये पाँच देवगण थे। इनमे से प्रत्येक गणमें बारह-बारह व्यक्ति थे। इन देवताओं के इन्द्र का नाम था- 'सुशान्ति'। उन दिनों जो सप्तर्षि थे, उनकी 'वन्द्य' संज्ञा थी। इस मन्वन्तर में 'परशु' और 'चित्र' आदि मनुपुत्र राजा थे।

चौथे मनु का नाम था-'तामस'। उनके मन्वन्तर में देवताओं के पर, सत्य और सुधी नाम वाले गण थे ।

इनमे से प्रत्येक गणमें सत्ताईस-सत्ताईस देवता थे । इन देवताओं के राजा इन्द्रका नाम था—'भुशुण्डी'। उस समय हिरण्यरोमा, देवश्री, ऊर्ध्वबाहु, देवबाहु, सुधामा पर्जन्य और मुनि-ये सप्तर्षि थे । ज्योतिर्धाम, पृथु, काश्य, अभि और धनक-ये तामस मनुके पुत्र इस भूमण्डलके राजा थे। पाँचवें मनुका नाम था— 'रैवत' । उनके मन्वन्तरमें अमित, निरत, वैकुण्ठ और सुमेधा—ये देवताओं के गण थे। इनमें से प्रत्येक गणमें चौदह-चौदह व्यक्ति थे ।

इन देवताओं के जो इन्द्र थे, उनका नाम था— 'असुरान्तक'। उस समय सप्तक आदि मनुपुत्र भूतल के राजा थे। शान्त, शान्तमय, विद्वान, तपस्वी, मेधावी और सुतपा-ये सप्तर्षि थे। छठे मनु का नाम 'चाक्षुष' था। उनके समय में पुरु और शतद्युम्न आदि मनुपुत्र राजा थे। उस समय अत्यन्त शान्त रहने वाले लेख, आप्य, प्रसूत, भव्य और प्रथित-ये पाँच महानुभाव देवगण थे। इन पाँचों गणों में आठ-आठ व्यक्ति थे। इनके इन्द्र का नाम 'मनोजव' था। उन दिनों मेधा, सुमेधा, विरजा, हविष्मान्, उत्तम, मतिमान् और सहिष्णु- ये सप्तर्षि थे। सातवें मनुको 'वैवस्वत' कहते हैं, जो इस समय वर्तमान हैं। इनके इक्ष्वाकु आदि क्षत्रियजातीय पुत्र भूपाल हुए। इस मन्वन्तरमें आदित्य, विश्वावसु और रुद्र आदि देवगण हैं और 'पुरंदर' इनके इन्द्र हैं।

वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भरद्वाज–ये इस मन्वन्तरके सप्तर्षि है ॥ १–१६ ॥

अब भविष्य मन्वन्तरों का वर्णन किया जाता है–आदित्यसे संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न हुए जो 'मनु' हैं, उनकी चर्चा पहले हो चुकी है और छाया के गर्भ से उत्पन्न दूसरे 'मनु' हैं। इनमें प्रथम उत्पन्न हुए जो 'सावर्ण' मनु हैं, उनके ही 'सावर्णिक' नामक आठवें मन्तन्तरका वर्णन सुनिये ।'सावर्ण' ही आठवें मनु होंगे। उस समय सुतप आदि देवगण होंगे और 'बलि' उनके इन्द्र होंगे । दीप्तिमान, नाभाग, नामा, कृप, अश्वत्थामा, व्यास और ऋष्यशृङ्ग–ये सप्तर्षि होंगे। विराज, उर्वरीश और निर्मोक आदि सावर्ण मनुके पुत्र राजा होंगे । नवें भावी मनु 'दक्षसावर्णि' हैं । धृति, कीर्ति, दीप्ति, केतु, प्रहस्त, निरामय तथा पृथुश्रवा आदि दक्षसावर्णि मनुके पुत्र उस समय राजा होंगे । उस मन्वन्तर में मरीचिगर्भ, सुधर्मा और हविष्मान्—ये देवता होंगे और उनके इन्द्र 'अद्भुत' नाम से प्रसिद्ध होंगे। सवन, कृतिमान, हव्य, वसु, मेधातिथि तथा ज्योतिष्मान् और सत्य- ये सप्तर्षि होंगे। दसवें मनु 'ब्रह्मसावर्णि' होंगे । उस समय विरुद आदि देवता और उनके 'शान्ति' नामक इन्द्र होंगे । हविष्मान्, सुकृति, सत्य, तपोमूर्ति, नाभाग, प्रतिमोक और सप्तकेतु–ये सप्तर्षि होंगे । सुक्षेत्र, उत्तम, भूरिषेण आदि 'ब्रह्मसावर्णि' के पुत्र राजा होंगे। ग्यारहवें मन्वन्तर में 'धर्मसावर्णि' नामक मनु होंगे। उस समय सिंह, सवन आदि देवगण और उनके 'दिवस्पति' नामक इन्द्र होंगे । निर्मोह, तत्त्वदर्शी, निकम्प, निरुत्साह, धृतिमान् और रुच्य–ये सप्तर्षि होंगे । चित्रसेन और विचित्र आदि धर्मसावर्णि मनुके पुत्र राजा होंगे। बारहवें मनु 'रुद्रसावर्णि' होंगे। उस मन्वन्तर में 'कृतवामा' नामक इन्द्र और हरित, रोहित, सुमना, सुकर्मा तथा सुतपा नामक देवगण होंगे। तपस्वी, चारुतपा, तपोमूर्ति, तपोरति, तपोधूति, ज्योति और तप ये सप्तर्षि होंगे। रुद्रसावर्णि के पुत्र देववान् और देवभेष्ठ आदि भूमण्डल के राजा होंगे। तेरहवें मनुका नाम रुचि होगा। उस समय स्रग्वी बाण और सुधर्मा नामक देवगण तथा उनके 'ऋषभ' नामक इन्द्र होंगे । निश्चित, अग्नितेजा, वपुष्मान्, धृष्ट, वारुणि, हविष्मान् और भव्यमूर्ति नहुष—ये सप्तर्षि होंगे। उस मनुके सुधर्मा तथा देवानीक आदि पुत्र भूपाल होंगे। चौदहवें भावी मनुका नाम 'भौम' होगा। उस समय 'सुरुचि' नामक इन्द्र और चक्षुष्मान्, पवित्र तथा कनिष्ठाभ नामक देवगण होंगे । अग्निबाहु, शुचि, शुक्र, माधव, शिव, असीम और जितश्वास – ये सप्तर्षि होंगे तथा उस भौम मनु के पुत्र उर्क, गम्भीर और ब्रह्मा आदि भूतल के राजा होंगे।

इस प्रकार मैंने आपसे चौदह मन्वन्तरों का और मनु के पुत्र तत्कालीन राजाओं का वर्णन किया, जिनके द्वारा इस वसुधा का पालन होता है। प्रत्येक मन्वन्तर में मनु, सप्तर्षि, देवता और भूपाल मनुपुत्र तथा इन्द्र—ये अधिकारी होते हैं । ब्रह्मन्, इन चौदह मन्वन्तरों के व्यतीत हो जाने पर एक हजार चतुर्युग का समय बीत जाता है। यह (ब्रह्माजी का) एक दिन कहलाता है । साधुशिरोमणे ! फिर उतने ही प्रमाण की उनकी रात्रि होती है। उस समय सब भूतों के आत्मा साक्षात् भगवान् नृसिंह ब्रह्मरूप धारण करके शयन करते हैं । सर्वत्र व्यापक एवं आदिविधाता सर्वरूप भगवान् जनार्दन उस समय समस्त त्रिभुवन को अपने में लीन करके अपनी योगमाया का आश्रय के शयन करते हैं । फिर जाग्रत् होने पर वे भगवान् पुरुषोत्तम पूर्वकल्प के अनुसार पुनः युग–व्यवस्था तथा सृष्टि करते हैं । ब्रह्मन् ! इस प्रकार मैने मनु, देवगण, भूपाल, मनुपुत्र और ऋषि–इन सबका आपसे वर्णन किया। आप इन सबको पालनकर्ता भगवान् विष्णु की विभूतियाँ ही समझें ।